# ॥ श्रीविष्णु एवं श्रीलक्ष्मि अभेदता ॥

श्रीविष्णुपुराणम्-प्रथमांशः/अध्यायः ८
पराशर उवाच ।
कथितस्तामसः सर्गो ब्रह्मणस्ते महामुने
रुद्रसर्ग प्रवक्ष्यामि तन्मे निगदतः शृगु ॥ ८.१॥

कल्पादावात्मनस्तुल्य सुतं प्रध्यायतस्ततः ।
प्रादुरासीत् प्रभोरङ्क कुमारो नीललोहितः ॥ ८.२॥

रुदन् वै सुस्वरं सोऽथ द्रवंश्च द्रिजसतम ।
किं रोदिषीति तं ब्रह्मा रुदन्तं प्रत्युवाच ह ॥ ८.३॥

नाम देहीति तं सोऽथ प्रत्युवाच प्रजापतिम् ।
रुद्रस्त्वं देव नाम्नासि मा रोदीर्धैर्य मावह ॥ ८.४॥

एवमुक्तः पुनः सोऽथ सप्तकृत्वो रुरोद वै ।
ततोऽन्यानि तदौ तस्मै सप्त नामानि वै प्रभुः ।

स्थानानि चैषामष्टानां पत्नीः पुत्रांश्च वै प्रभुः ॥ ८.५॥

भवं सर्व्व महेशानं तथा पशुपतिं द्रिज ।
भममुग्रं महादेवं उवाच स पितामहः ॥ ८.६॥

चक्र नामान्यथ तानि स्थानान्येषां चकार सः ।
सूर्य्यो जलं मही वह्निर्वायुराकाशमेव च ।
दीक्षितो ब्राह्मणः सोम इत्येतास्तनवः क्रमात् ॥ ८.७॥

सुवर्चला तथैवोमा सुकेशी चापरा शिवा ।
स्वाहा दिशस्तथा दीक्षा रोहणी च यथाक्रमम् ॥ ८.८॥

सूर्य्यदीनां नरश्वेष्ठ रुद्राद्य नैमिभिः सह ।
पत्न्यः स्मृता महाभाग तदपत्यानि मे शृणु ।
येषां सूतिप्रसूतैर्वा इदमापूरितं जगत् ॥ ८.९॥



From http://sanskritdocuments.org

शनैश्चरस्तथा शुक्रो लोहिताङ्गो मनोजवः ।
स्कन्दः खर्गोऽथ सन्तानो बुधश्चानुक्रमात् सुताः ॥ ८.१०॥

एवम्प्रकारो रुद्रोऽसौ सतीं भार्य्यामविन्दत ।
दक्षकोपाज्च तत्याज सा सती स्वं कलेवरम् ॥ ८.११॥

हिमवद्दु हिता साभून्मेनायां द्रिजसतम ।
उपयेमे पुनश्चोमामनन्यां भगवात् भवः ॥ ८.१२॥

देवौ धातृविधातारौ भृगोः ख्यातिरसूयत ।
श्वियञ्च देवदेवस्य पत्नी नारायणस्य या ॥ ८.१३॥

मैत्रेय उवाच ।
क्षीराब्धौ श्रीः समुत्पन्ना श्रू यतेऽमृतमन्थने ।
भृगोः ख्यात्यां समुत्पन्नेत्येतदाह कथं भवान् ॥ ८.१४॥

पराशर उवाच ।
नित्यैव सा जगन्माता बिष्णोः श्रीरनपायिनी ।
यथा सर्वगतो विष्णुस्तथैवेयं द्रिजोत्तम ॥ ८.१५॥

अर्थो विष्णुरिय वाणी नीतिरेषा नयो हरिः ।
बोधो विष्णुरियं बुद्धिर्धम्मोऽसौ सतक्रिया त्वियम् ॥ ८.१६॥

स्त्रष्टा विश्णुंरियं सृष्टिः श्रीर्भूमिर्भूधरो हरिः ।
सन्तोषो भगवान् लक्ष्मीस्तुष्टिर्मैत्रेय शाश्वती ॥ ८.१७॥

इच्छा श्रीर्भगवान् कामो यज्ञोऽसौ दक्षिणा तुसा ।
आज्याहुतिरसौ देवी पुरोडाशो जनार्द्द नः ॥ ८.१८॥

पत्नीशाला मुने लक्ष्मीः प्राग्वंशो मधुसूदनः ।
चितिर्लक्ष्मीर्हरिर्यूप इध्मा श्रीर्भगवान् कुशः ॥ ८.१९॥

सामस्वरूपी भगवानुदगीतिः कमलालया।
चितिर्लक्ष्मीर्जगन्नाथो वासुदेवो हुताशनः ॥ ८.२०॥



From http://sanskritdocuments.org

शङ्करो भगवाञ्छौरिर्भूतिर्गौरी द्विजोत्तम ।
मैत्रेय कैशवः सूर्य्यस्ततूप्रभा कमालालया ॥ ८.२१॥

विष्णुः पितृगणः पद्मा स्वधा शाश्वततुष्टिदा ।
द्यौः श्रीः सर्व्वात्मको विष्णुरवकाशोऽतिविस्तरः ॥ ८.२२॥

शशाङ्कः श्रीधरः कान्तिः श्रीस्तस्थैवानपायिनी ।
धृतिर्सक्ष्मीर्जगज्वेष्टा वायुः सर्व्वन्नगो हरिः ॥ ८.२३॥

जलधिर्द्रिज गोविन्दस्तद्रलो श्रीर्महामते ।
लक्ष्मीस्वरूपमिन्द्राणी देवन्द्रो मधुसूदनः ॥ ८.२४॥

यमश्चक्रधरः साक्षादू धूमोर्णा कमलालया ।
ऋद्धिः श्रीः श्रीधरो देवः स्वयमेव धनेश्वरः ॥ ८.२५॥

गौरी लक्ष्मीर्महाभागा केशवो वरुणः स्वयम् ।
श्रीर्देवसेना विप्रेन्द्र देवसेनापतिर्हरिः ॥ ८.२६॥

अवष्टम्भो गदापाणिः शक्तिर्लक्ष्मीर्द्रिजोत्तम ।
काष्ठा लक्ष्मीर्निमेषोऽसौ मुहूर्त्तोऽसौ कला तु सा ॥ ८.२७॥

ज्योत्स्ना लक्ष्मीः प्रदीपोऽसौ सर्व्वः सर्व्वेश्वरो हरिः ।
लताभूता जगनामाता श्रीर्विंष्णुर्द्रुमसंस्थितः ॥ ८.२८॥

विभावरी श्रीर्दिवसो देवश्चक्रगदाधरः ।
वरप्रदो वरोविष्णर्वधूः पद्मवनालया ॥ ८.२९॥

नदस्वरूपी भगवाञ्छोर्नदीरूपसंस्थितिः ।
ध्वजश्च पुण्डरीकाक्षः पताका कमालालया ॥ ८.३०॥

तृष्णालक्ष्मीर्जगत्स्वामी लोभो नारायणः परः ।
रति-रागौ च धर्मज्ञ लक्ष्मीर्गोविन्द एव च ॥ ८.३१॥

किञ्चातिबहुनोक्तन संक्षेपेणेदमुच्यते ।
देवतिर्य्यङ्मनुष्यादौ पुंनाम्नि भगवान् हरिः ।
स्त्रोनाम्नि लक्ष्मीर्मैत्रेय नानयोर्बिद्यते परम् ॥ ८.३२॥



From http://sanskritdocuments.org

श्रीविष्णुपुराण प्रथमांश आठवाँ अध्याय
श्री विष्णू भगवान ओर् जगन्माता श्री एवं लक्ष्मीजी की अभेदता

श्रीपराशरजी बोले-हे महामुने । मैने तुमसे ब्रह्माजीके तामस-सर्गका वर्णन किया, अब मैं रुद्रसर्गका वर्णन करता हूँ, सो सुनो ॥ ८.१॥

कल्पके आदिमें अपने समान पुत्र उत्पन्न होनेके लिये चिन्तन करते हुए ब्रह्माजीकी गोदमें नीललोहति वर्णके एक कुमारका प्रादुर्भाव हुआ ॥ ८.२॥

हे द्विजोत्तम । जन्मके अनन्तर ही वह जोर जोरसे रोने और इधर-उधर दौडने लगा । उसे रोता देख ब्रह्माजीने उससे पूछ-''तू क्यों रोता है ?'' ॥ ८.३॥

उसने कहा-''मेरा नाम रखो।'' तब ब्रह्माजी बोले-' हे देव । तेरा नाम रुद्र है, अब तू मत रो, धैर्य धारण कर ।' ऐसा कहनेपर भी वह सात बार और रोया ॥ ८.४॥

तब भगवान् ब्रह्माजीने उसके सात नाम और रखे; तथा उन आठोंके स्थान, स्त्री और पुत्र भी निश्चित किये ॥ ८.५॥

हे द्विज । प्रजापतिने उसे भव, शर्व, ईशान, पशुपति, भीम, उग्र और महादेव कहकर सम्बोधन किया ॥ ८.६॥

यही उसके नाम रखे और इनके स्थान भी निश्चित किये । सूर्य, जल, पृथिवी, वायु, अग्नि, आकाश, श यज्ञमें घ दीक्षित ब्राह्मण और चन्द्रमा-दे क्रमशः उनकी मूर्तियाँ हैं ॥ ८.७॥

हे द्विजश्रेष्ठ । रुद्र आदि नामोंके साथ उन सूर्य आदि मूर्तियोंकी क्रमशः सुवर्चला, ऊषा, विकेशी, अपरा, शिवा, स्वाहा, दिशा, दीक्षा और रोहिणी नामकी पत्नियाँ हैं । हे महाभाग । अब उनके पुत्रोंके नाम सुनो; उन्हींके पुत्र-पौत्रादिकोंसे यह सम्पूर्ण जगत् परिपूर्ण है ॥ ८.८-१०॥

शनैश्चर, शुक्र, लेहिताङ्ग, मनोजव, स्कन्द, सर्ग, सन्तान



From http://sanskritdocuments.org

और बुध-ये क्रमशः उनके पुत्र हैं ॥ ८.११॥

ऐसे भगवान् रुद्रने प्रजापति दक्षकी अनिन्दिता पुत्री सतीको अपनी भार्यारूपसे ग्रहण किया ॥ ८.१२॥

हे द्विजसत्तम । उस सतीने दक्षपर कुपित होनेके कारण अपना शरीर त्याग दिया था । फिर वह मेनाके गर्भसे हिमाचलकी पुत्री ( उमा ) हुई । भगवान् शंकरने उस अनन्यपरायणा उमासे फिर भी विवाह किया ॥ ८.१३-१४॥

भृगुके द्वारा ख्यातिने धाता और विधातानामक दो देवताओंको तथा लक्ष्मीजीको जन्म दिया जो भगवान् विष्णुकी पत्नी हुई ॥ ८.१५॥

श्रीमैत्रेयजी बोले-भगवन् । सुना जाता है कि लक्ष्मीजी तो अमृत-मन्थनके समय क्षीर-सागरसे उत्पन्न हुई थीं, फिर आप ऐसा कैसे कहते हैं कि वे भृगुके द्वारा ख्यातिसे उत्पन्न हुई ॥ ८.१६॥

श्रीपराशरजी बोले-हे द्विजोत्तम । भगवानका कभी संग न छोडनेवाली जगज्जननी लक्ष्मीजी तो नित्य ही हैं और जिस प्रकार श्रीविष्णुभगवान् सर्वव्यापक हैं वैसे ही ये भी हैं ॥ ८.१७॥

विष्णु अर्थ हैं और ये वाणी हैं, हरि नियम हैं और ये नीति हैं, भगवान् विष्णु बोध हैं और ये बुद्धि हैं तथा वे धर्म हैं और ये सत्क्रिया हैं ॥ ८.१८॥

हे मैत्रेय । भगवान् जगतके स्त्रष्टा हैं और लक्ष्मीजी सृष्टि हैं, श्रीहरि भूधर ( पर्वत अथवा राजा ) हैं और लक्ष्मीजी भूमि हैं तथा भगवान् सन्तोष हैं और लक्ष्मीजी नित्य-तुष्टि हैं ॥ ८.१९॥

भगवान् काम हैं और लक्ष्मीजी इच्छी हैं, वे यज्ञ हैं और ये दक्षिणा हैं, श्रीजनार्दन पुरोडाश हैं और देवी लक्ष्मीजी आज्याहुति ( घृतकी आहुति ) हैं ॥ ८.२०॥

हे मुने । मधुसूदन यजमानगृह हैं और लक्ष्मीजी पत्नीशाला हैं, श्रीहरि यूप हैं और लक्ष्मीजी चिति हैं तथा भगवान् कुशा हैं



From http://sanskritdocuments.org

और लक्ष्मीजी इध्मा हैं ॥ ८.२१॥

भगवान् सामस्वरूप हैं और श्रीकमलादेवी उद्गीति हैं, जगत्पति भगवान् वासुदेव हुताशन हैं और लक्ष्मीजी स्वाहा हैं ॥ ८.२२॥

हे द्विजोत्तम । भगवान् विष्णु शंकर हैं और श्रीलक्ष्मीजी गौरी हैं तथा हे मैत्रेय । श्रीकेशव सूर्य हैं और कमलवासिनी श्रीलक्ष्मीजी उनकी प्रभा हैं ॥ ८.२३॥

श्रीविष्णु पितृगण हैं और श्रीकमला नित्य पुष्टिदायिनी स्वधा हैं, विष्णु अति विस्तीर्ण सर्वात्मक अवकाश हैं और लक्ष्मीजी स्वर्गलोक हैं ॥ ८.२४॥

भगवान् श्रीधर चन्द्रमा हैं और श्रीलक्ष्मीजी उनकी अक्षय कान्ति हैं, हरि सर्वगामी वायु हैं और लक्ष्मीजी जगच्चेष्टा ( जगतकी गति ) और धृति ( आधार ) हैं ॥ ८.२५॥

हे महामुने । श्रीगोविन्द समुद्र हैं और हे द्विज । लक्ष्मीजी उसकी तरङ्ग हैं, भगवान् मधुसूदन देवराज इन्द्र हैं और लक्ष्मीजी इन्द्राणी हैं ॥ ८.२६॥

चक्रपाणि भगवान् यम हैं और श्रीकमला यमपत्नी धूमोर्णा हैं, देवाधिदेव श्रीविष्णु कुबेर हैं और श्रीलक्ष्मीजी साक्षात् ऋद्धि हैं ॥ ८.२७॥

श्रीकेशव स्वयं वरुण हैं और महाभागा लक्ष्मीजी गौरी हैं, हे द्विजराज । श्रीहरि देवसेनापति स्वामिकार्तिकेय हैं और श्रीलक्ष्मीजी देवसेना हैं ॥ ८.२८॥

हे द्विजोत्तम । भगवान् गदाधर आश्रय हैं और लक्ष्मीजी शक्ति हैं, भगवान् निमेष हैं और लक्ष्मीजी काष्ठा हैं, वे मुहूर्त हैं और ये कला हैं ॥ ८.२९॥

सर्वेश्वर सर्वरूप श्रीहरि दीपक हैं और श्रीलक्ष्मीजी ज्योति हैं, श्रीविष्णु वृक्षरूप हैं और जगन्माता श्रीलक्ष्मीजी लता हैं, ॥ ८.३०॥



From http://sanskritdocuments.org

चक्रगदाधरदेव श्रीविष्णु दिन हैं और लक्ष्मीजी रात्रि हैं, वरदायक श्रीहरि वर हैं और पट्ननिवासिनी श्रीलक्ष्मीजी वधू हैं ॥ ८.३१॥

भगवान् नद हैं और श्रीजी नदी हैं, कमलनयन भगवान् ध्वजा हैं और कमलालया लक्ष्मीजी पताका हैं ॥ ८.३२॥

जगदीश्वर परमात्मा नारायण लोभ हैं और लक्ष्मीजी तृष्णा हैं तथा हे मैत्रेय । रति और राग भी साक्षात् श्रीलक्ष्मी और गोविन्दरूप ही हैं ॥ ८.३३॥

अधिक क्या कहा जाय ? संक्षेपमें, यह कहना चाहिये कि देव, तिर्यक् और मनुष्य आदिमें पुरुषवाची भगवान् हरि हैं और स्त्रीवाची श्रीलक्ष्मीजी, इनके परे और कोई नहीं है ॥ ८.३४-३५॥

shrIviShNupurANam-prathamAMshaH adhyAyaH 8

---

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com
Last updated July 20, 2014
From http://sanskritdocuments.org .
The text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of any website or individuals or commercial purpose without permission.



From http://sanskritdocuments.org